International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-02-2026, Accepted: 13-03-2026, Published: 28-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 253-255

डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कहानियोँ में नैतिक मूल्य

वसुंधरा देसाई
शोधछात्रा, संगमनेर कॉलेज, पुणे विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
हर समाज में उसके अपने कुछ मूल्य होते हैं जो नैतिक मूल्य या जीवन मूल्य कहलाते हैं। यह मूल्य समाज को सुचारू रूप से चलने में मार्गदर्शन करते हैं। मूल्यविहीन समाज उन्नति नहीं कर सकता।अगर समाज को प्रगति पथ पर आगे बढ़ाना है और स्थैर्य बनाए रखना है तो नैतिक मूल्यों की आधारशिला होना आवश्यक है।समय के अनुसार मूल्य में परिवर्तन होता है, तथापि उनका उद्देश्य समान रहता है। सशक्त एवं सोद्देश्यपूर्ण साहित्य इन मूल्यों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संवहन करता है। बिगड़ते हुए जीवन मूल्यों को सही मार्ग पर लाने का प्रयास एक उत्तम रचनाकार हमेशा करता है। डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में भी हमें ऐसे ही प्राचीन एवं आधुनिक जीवन मूल्य दृष्टिगोचर होते हैं। बचपन में ही अगर कुछ नैतिक मूल्यों की शिक्षा बाल मन पर हो जाए तो, उस समाज के उज्ज्वल भविष्य निर्माण में अधिक कष्ट एवं समय की आवश्यकता नहीं लगती। किसी यथार्थ की अनुभूति हमें शुक्ला जी की कहानी पढ़ते हुए होती है।

मूल शब्दः नैतिक मूल्य, समाज, बचपन, संस्कार, परिवर्तन, उज्जवल भविष्य

समाज के स्थैर्य और विकास की आधारशिला उस समाज द्वारा अपने गए जीवन मूल्य होते हैं। भारतीय संस्कृती ने पूर्वपार से उच्च नैतिक मूल्यों का स्वीकार किया है तभी विश्व की महान संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति की गणना होती है।भारत ने हमेशा शांतिपूर्ण जीवन का पक्ष लिया है, युद्ध, आक्रमण ऐसे विनाशकारी गतिविधियों का प्राचीन काल से ही भारत ने विरोध किया। इसीलिए संपूर्ण विश्व में वह शांतिदूत कहलाया। सुसंपन्न जीवन शैली, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष विज्ञान, अंक शास्त्र आदि विविध विषयों का परिचय भारत ने ही संपूर्ण विश्व को कराया है। तभी भारत विश्व गुरु की उपाधि से सम्मानित है। परिश्रमपूर्वक शांतिपूर्ण जीवन जीना यहाँ की संस्कृति की पहचान है। रामायण, महाभारत जैसे महान ग्रंथों द्वारा इस देश की सांस्कृतिक संपन्नता की झलक मिलती है।

किसी भी समाज का ज्ञान विज्ञान कला उस समाज की पहचान होती है। आयुर्वेद जैसे महान ग्रंथ द्वारा चिकित्सा विज्ञान ने लोगों को दुर्लभ व्याधियों से मुक्ति दिलाई। पतंजलि के योग शास्त्र से भारतीय जनता को स्वस्थ जीवन की कुंजी मिल गई। वास्तुकला, शिल्पकला, नृत्य, नाट्य, गायन, कला आदि कलाओं के विकास ने मनोरंजन के साथ ही सांस्कृतिक विकास भी संभव किया। रूस, जर्मनी आदि अनेकों देश प्राचीन भारतीय ज्ञान को आत्मसात करने हेतु प्राचीन वेद तथा पुराण ग्रंथो का अध्ययन कर रहे हैं। संपूर्ण विश्व में 21 जून को योग दिवस मनाया जाता है, यह निर्विवाद रूप से भारतीय संस्कृति की महानता का ही परिचायक है।

साहित्य से समाज की झलक मिलती है और समाज साहित्य का निर्माता है। अर्थात समाज में जो भी घटित होता है वही साहित्य में प्रतिबिंबित होता है। अन्य कलाओं के समान ही प्राचीन भारतीय साहित्य हर युग में समाज का मार्गदर्शक रहा है। चार वेद, अठराह पुराण, रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथ भारतीय तत्वज्ञान का सार है। मौखिक साहित्य परंपरा से लिखित साहित्य परंपरा का सफर तय करते हुए प्राचीन ज्ञान एवं संकल्पनाओं से कुछ छूटता गया, तो कुछ नया जुड़ता भी गया। लेखन परंपरा के विकास के साथ प्राचीन ग्रंथो के ज्ञान को सुरक्षित रखना संभव हो सका। यथार्थ के धरातल पर रचित साहित्य समाज का दर्पण होता है। काल्पनिक साहित्य भी कोरी कल्पना पर नहीं लिखा जाता उसका आधार भी कहीं ना कहीं यथार्थ ही होता है। यथार्थ साहित्य में कुछ मात्रा में कल्पना होती है, तो इसके विपरीत काल्पनिक साहित्य में भी नाम मात्र यथार्थ हो सकता है।

मनोरंजन प्रधान साहित्य में कल्पना का आधार अधिक लिया जाता है। हिंदी साहित्य में यथार्थपरक साहित्य के साथ ही कल्पना प्रधान साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्यकारों ने काव्य विधा में ही अपनी प्रतिभा को व्यक्त किया। आधुनिक काल में गद्य साहित्य के विकास के साथ हिंदी साहित्य में कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, जीवनी आदि अनेक विधाओं का उगम हुआ। हिंदी साहित्य में बाल कहानी का विकास संपूर्णत: आधुनिक काल में हुआ है। हिंदी में बाल कहानी का प्रारंभ पूर्व भारतेंदु युग में हुआ। बच्चे समाज का भविष्य निर्धारित करते हैं। अत: बच्चों को उच्च नैतिक शिक्षा मिले यह हर समाज का कर्तव्य होता है। नीति शब्द से नैतिक शब्द बना। जीवन में सही गलत की पहचान ही नीति कहलाती है। समाज द्वारा स्वीकृत आचरण नैतिक मूल्य समझे जाते हैं।

सच्चाई, ईमानदारी, मेहनत, सदाचरण, बड़ों का आद,र सम्मान, सहयोग, करुणा, वीरता, निडरता, देशप्रेम आदि कुछ महत्वपूर्ण भारतीय नैतिक मूल्य है। इन मूल्यों का महत्व सर्वकालिक है। यही मूल्य या गुण मनुष्य को आदर्श की ओर ले जाते हैं। सिद्धहस्त बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कहानियों में यह नैतिक मूल्य दूध में शक्कर के समान घुल मिल गए हैं। व्यवसाय से समाजशास्त्र के अध्ययन कर्ता शुक्ल जी ने हमारे देश का भविष्य अधिक उज्ज्वल एवं सुरक्षित बनाने हेतु, हिंदी भाषा में बाल कहानियों का सृजन किया। उनकी आज तक लिखी हुई और विविध पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित सभी बाल कहानियों के संकलन 'परशुराम शुक्ल बाल कथा साहित्य सामग्र' शीर्षक से 13 भागों में 2016 में विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर द्वारा प्रकाशित हुए। जिसमें जंगल की बाल कहानियाँ, मनोरंजक बाल कहानियाँ, परियों की बाल कहानियाँ, राजा रानी की बाल कहानियाँ, वैज्ञानिक बाल कहानियाँ, शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ, ऐतिहासिक बाल कहानियाँ, क्रांतिकारियों की बाल कहानियाँ, पंचतंत्र की बाल कहानियाँ, प्रेरणादायक बाल कहानियाँ, लोक कथाओं पर आधारित बाल कहानियाँ, प्राचीन ग्रंथो की बाल कहानियाँ, एवं नैतिक बाल कहानियाँ आदि संग्रह प्रकाशित हुए। बालकों के साथ ही उनके अभिभावकों का भी मार्गदर्शन करने हेतु 2021 में उनका बाल विमर्श की कहानियाँ संग्रह प्रकाशित हुआ।

डॉ. शुक्ल का यह मानना है कि बच्चों को कोरा उपदेश पसंद नहीं आता। अतः मनोरंजन की चाशनी में डुबोकर अगर उन तक हमारी संस्कृति के उच्च मूल्य पहुँचाये जाए , तो निश्चित रूप से उनका भविष्य संवर जाएगा । मुसीबत के समय बिना डरे अपनी सूझबूझ का उपयोग करते हुए उससे मार्ग निकालना चाहिए, यह सीख 'बुद्धिमान आलोक' इस कहानी से अनायास ही बच्चों तक पहुँच जाती है। आलोक जिसका अपहरण हो चुका था, वहाँ बेहोश होने का नाटक करते हुए, डॉ. वर्मा की सहायता से अपने पिता को फोन पर उन बदमाशों की जानकारी बता दी। "दूसरे दिन सूरज निकलने के पहले ही रामपुर के सभी अपहृत बच्चे शहर के बाहर बनी एक इमारत में मिल गए। और इसके साथ ही एक साहसी बच्चे की बुद्धिमानी से बच्चों का अपहरण करने वाले एक गिरोह का अंत हो गया।"[1] ऐसी ही एक अन्य कहानी में बिना डरे हमें अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ना चाहिए यह बात समझाते हुए 'बूँद का साहस' इस कहानी में शुक्ल जी एक परी के माध्यम से अभिनव को बताते हैं कि कैसे एक डरी हुई बूँद अपने साहस के कारण मोती बन जाती है।" तभी मैं किसी कठोर जीव से टकराई। सागर की लहरों में एक सीप मुँह खोले मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे पाते ही उसकी क्षुधा शांत हो गई और मैं मोती बन गई।"[2]

माता–पिता या बड़ों का आदर सम्मान करना चाहिए, उनकी हर उचित बात माननी चाहिए, यह शुक्ल जी ने कुछ प्राचीन कहानियों के माध्यम से भी बताया है। राम भक्त हनुमान अपनी माता अंजनी का बड़ा आदर और सम्मान करते थे। उनकी हर बात मानते थे। जब बाल हनुमान सूर्य देव को खा जाते हैं, तो सारी पृथ्वी पर हाहाकार मर जाता है। इंद्रदेव के अनुरोध करने पर माता अंजनी हनुमान को इंद्रदेव को मुक्त करने के लिए कहती है। तब जो बालक इंद्रदेव की क्षमा याचना करने पर भी उनकी बात नहीं मान रहे थे।" देवराज इंद्र का गर्व चूर करने वाले बालक हनुमान ने माँ के आदेश का पालन करते हुए, सूर्य देव को मुक्त कर दिया।"[3]

समाज में सभी को न्याय मिले, किसी पर अन्याय ना हो, यह स्वस्थ समाज का सूचक है। हमारे इतिहास में ऐसे कई न्यायी राजाओं के उदाहरण हमें मिलते हैं। बादशाह अकबर के शासनकाल में अगर किसी पर अन्याय होता था, तो बीरबल अपनी चतुराई और बुद्धिमत्ता से बादशाह अकबर को उनकी गलती का एहसास कराते थे। तब अकबर उचित न्याय कर पाते थे। "अगले दिन उन्होंने रात भर नदी में खड़े रहने वाले वृद्ध व्यक्ति को बुलाया और एक लाख मोहरे देकर उसे सम्मान पूर्वक विदा किया।"[4] शुक्ल जी की कहानियों में कर्म की महत्ता सर्वप्रथम आती है। परिश्रमपूर्वक धन अर्जन करके जीवन यापन करना सुखी जीवन की कुंजी है। एक कहानी में वह बताते हैं कि कैसे एक आलसी मनुष्य साधु के प्रयत्नों से परिश्रामपूर्वक जीवन जीने का महत्व समझ पाता है। "वत्स! मैंने तुम्हें अशर्फियों से भी मूल्यवान कुछ वस्तुएँ दी है।" साधु बड़े रहस्यपूर्ण स्वर में बोला। . ..... "वत्स! मैंने तुम्हें श्रम करने की शक्ति, लगन और सहनशीलता दी है।"..... कुछ ही वर्षों में अपनी मेहनत और लगन के बल पर वह जमीदार लखनसिंह के समान धनी और संपन्न व्यक्ति बन गया।"[5]

अच्छे व्यक्ति का साथ मानव को हमेशा प्रगति पथ पर ले जाता है। इसलिए हमारे संस्कृति तथा हमारे घर के बड़े बुजुर्ग भी हमेशा अच्छे लोगों की संगति करने की शिक्षा हमें देते हैं। शुक्ल जी ने पक्षियों के माध्यम से यह बात बच्चों को समझाई है। एक बार कबूत रकी मित्रता एक कौवे से हो जाती है। लालची कौवा आकर कबूतर के साथ महल के रसोई के बाहर लगी टोकरी में आकर रहने लगता है। कबूतर के बार–बार बताने पर भी कौवा अपने लालच को रोक नहीं पाता और रसोई में जाकर मछली चुराते हुए पकड़ा जाता है। रसोईया क्रोध में कौवे को मार देता है। जब कबूतर को यह बात पता चलती है, तो वह सोचता है कि "बुरे व्यक्ति का साथ करने वाला भी बदनाम हो जाता है। लोग उसे भी बुरा समझने लगते हैं। अतः उसने रसोई घरवाली टोकरी उसी समय छोड़ दी और एक वृक्ष पर आकर रहने लगा।"[6] दूसरों की निस्वार्थ सहायता करना आपको जीवन में संतोष प्रदान करता है। 'बाँसुरी का जादू' शीर्षक एक वृक्ष कथा में शुक्ल जी बताते हैं कि महीनों से अचेत राजकुमारी को होश में लाने के लिए एक लाख सुवर्ण मुद्राओं का पुरस्कार रखा गया था। पर नवयुवक बिना किसी अपेक्षा के वहाँ से चला जाता है। "राजा–रानी और राज्य के सभी लोग खुश हो गए। वे राजकुमारी के हाल–चाल पूछने लगे और नवयुवक को कुछ देर के लिए भूल से गए। जब उन्हें नवयुवक की याद आई तो वह जा चुका था।"[7]

समय और काल के अनुसार जीवन मूल्यों में भी कुछ परिवर्तन आ जाता है। प्राचीन नैतिक मूल्यों की जगह कुछ नए मूल्य ले लेते हैं। जो तत्कालीन जीवन में आवश्यक हो जाते हैं। ऐसे ही कुछ मूल्य आधुनिक जीवन की दृष्टि से अपनाने अनिवार्य है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, पर्यावरण संरक्षण, भेदभाव रहित जातिमुक्त समाज, समानता, संयुक्त परिवार आदि मूल्य आधुनिक संदर्भ में देखना एक नई दृष्टि देता है। शुक्ल जी के साहित्य में प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों के साथ ही आधुनिक मूल्य भी समाविष्ट हैं। जितना महत्व प्राचीन मूल्यों को दिया गया है उतना ही जरूरी उन्होंने आधुनिक मूल्यों को भी समझा है।

आज के आधुनिक युग में हर कृति को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखना आवश्यक है। किसी भी कार्य के पीछे जो कार्य–कारण भाव छुपा होता है, उस कसौटी पर उस चीज का निरीक्षण करना, उसको परखना वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। जो हम हमारे रोज के जीवन में सहजता से अपना सकते हैं। सरकार एवं समाज सेवक भारत से अंधश्रद्धा को जड़ सहित उखाड़ फेंकना चाहते हैं। किंतु ढोंगी साधु बाबाओं तथा तांत्रिक–मांत्रिकों के करण इसमें पूरी तरह से सफलता नहीं मिल पा रही है । भोली–भाली जनता को गुमराह कर यह लोग अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेते हैं। शुक्ल जी लिखित 'बगीचे का प्रेत' कहानी के अरुणा को भी लगता है कि जैसे उसकी देवरानी ने उसकी बेटी पर कुछ जादू टोना कर दिया है, इसलिए वह बार–बार बीमार पड़ती है। बाद में अंकित उन्हें बताता है – "मैंने अन्नू के कई टेस्ट किए। मेरा शक ठीक निकला। अन्नू को गुलाब के सुगंध की एलर्जी है। कानपुर वाले बगीचे के गुलाब के कारण वह बीमार हो जाती थी।"[8] तब उन्हें अपनी गलती का एहसास होता है। और अंधश्रद्धा तथा संशय के कारण बिगड़े हुए रिश्ते फिर से जुड़ जाते हैं।

नागरिकों में स्वदेश प्रेम तथा स्वदेशाभिमान उस देश की रक्षा एवं उन्नति में सहायक सिद्ध होती है। परतंत्र भारत में अंग्रेजों के गुलामी के प्रति नफरत एवं विद्रोह ने ही यहाँ की जनता में देशप्रेम की भावना जागृत की थी। यहाँ का हर एक बच्चा, युवा, प्रौढ़ या फिर बूढ़ा हो, स्त्री हो या पुरुष हो सभी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपने प्राण तक न्योछावर करने के लिए तैयार थे । ऐसी ही एक स्वतंत्रता सेनानी थी, मातंगिनी। बंगाल की इस महिला ने अहिंसक आंदोलन का नेतृत्व किया। जुलूस पर पुलिस का हमला होने पर भी उसने अपने हाथों से तिरंगा न छुटने दिया। "मातंगिनी के दोनों हाथ बेकार हो चुके थे। फिर भी उसने तिरंगा नहीं छोड़ा और अपने दोनों घायल हाथों से तिरंगा अपने सीने से चिपका कर लोगों का आह्वान किया।"[9] देश प्रेम की भावना से भरपूर ऐसी कहानियाँ बच्चों में वीरता, त्याग एवं समर्पण की भावना का विकास करती है। साथ ही अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की भी शिक्षा देती है।

सभी स्तरों पर समाज में समानता का तत्व समाज विकास को बढ़ावा देता है। परिवार एवं समाज में बेटा–बेटी में कोई अंतर

नहीं होना चाहिए ,उन्हें पढ़ने–लिखने एवं आगे बढ़ने का समान मौका मिलना चाहिए। डॉ. शुक्ल लिखित 'परिवेश' कहानी के केशव भी इसी मत का अनुसरण करते थे। "वह परंपरावादी परिवार के होते हुए आधुनिक विचारों के थे। वह सीमित परिवार के पक्षधर थे और बेटा–बेटी दोनों को समान समझते थे। उनका मानना था कि बेटे के समान ही बेटी को भी खूब पढ़ाना–लिखाना चाहिए और उसे योग्य बनाना चाहिए। [10] डॉ. शुक्ल हमेशा से नारी विकास एवं नारी सक्षमीकरण के पक्षधर रहे हैं। अतः उनकी लिखी कहानियों में प्राचीन शूरवीर रानियों के साथ ही आधुनिक महिला क्रांतिकारी, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक आदि क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली महिलाओं का सम्मान के साथ उल्लेख दिखाई देता है। उन्होंने भारत की क्रांतिकारी एवं शूरवीर महिलाओं पर अनेकों कहानियाँ लिखी है। जिसके स्वतंत्र कहानी संग्रह भी प्रकाशित है।

विभक्त परिवार आधुनिक काल की देन है। कोरोना जैसी महामारी के समय लोगों ने अपनों का महत्व समझा। परिवार में सबसे अधिक देखभाल बच्चों को तथा परिवार के बुजुर्ग लोगों को होती है। संयुक्त परिवार में यह जिम्मेदारी परिवार के सभी सदस्य मिलकर पूरी करते हैं किंतु आज के छोटे विभक्त परिवारों में किसी के पास इनके लिए समय नहीं होता। "अब करुणा शंकर को रात में हमेशा दोपहर का बच्चा हुआ खाना ही खाना पड़ता था कभी–कभी तो वह ठंडा खाना ही खाकर लेट जाते थे और रात भर करवटें बदलते रहते थे उन्होंने जीवन में हमेशा ताजा और गरम खाना खाया था।"[11] शुक्ल जी की कहानियों में बच्चों पर अच्छे संस्कार हेतु, घर में दादा–दादी या नान–नानी के महत्व को भी अधोरेखित किया गया है।

समग्रतः डॉ. परशुराम शुक्ल की कहानियों में प्राचीन भारतीय एवं आधुनिक जीवन के सुयोग्य नैतिक मूल्यों का महत्व सिद्ध हुआ है। यह बाल कहानियाँ बच्चों की अंतरंग मित्र बन जाती है। जो मनोरंजन के साथ बच्चों पर अच्छे संस्कार भी करती है। इन कहानियों के पठन से बच्चों में सदाचार, भाईचारा, परोपकार, सहायता, सामानता, बंधुता, देशप्रेम आदि जीवन मूल्यों का विकास निसंदेह हो सकता है। निःसंदेह यह मूल्य बालकों को देश का एक जिम्मेदार एवं कर्तव्यनिष्ठ नागरिक होने में सहायता करते हैं।

संदर्भ

1. डॉ. शुक्ल परशुराम, नैतिक बाल कहानियाँ, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2016, पृष्ठ–122
2. उपर्युक्त, पृष्ठ– 111
3. डॉ.शुक्ल परशुराम,प्राचीन ग्रंथो की बाल कहानियाँ,विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2015,पृष्ठ–82
4. डॉ. शुक्ल परशुराम, शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2015, पृष्ठ–68
5. डॉ. शुक्ल परशुराम, शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ,विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2015, पृष्ठ–57
6. डॉ. शुक्ल परशुराम,मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक बाल कहानियाँ,विवेक पब्लिशिंग हाउस,जयपुर, 2020,पृष्ठ– 14
7. डॉ. शुक्ल परशुराम,राजा–रानी की बाल कहानियाँ, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर,2016,पृष्ठ–45
8. डॉ. शुक्ल परशुराम, वैज्ञानिक बाल कहानियाँ, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2016, पृष्ठ–67
9. डॉ. शुक्ल परशुराम,क्रांतिकारियों की बाल कहानियाँ,विवेक पब्लिशिंग हाउस,जयपुर,2016,पृष्ठ–125
10. डॉ. शुक्ल परशुराम, बाल विमर्श की कहानियाँ, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2021 पृष्ठ–109
11. उपर्युक्त, पृष्ठ– 190